International Journal of Applied Research 2016; 2(2): 754-756

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 754-756
www.allresearchjournal.com
Received: 15-12-2015
Accepted: 17-01-2016

डॉ. रंजना तिवारी
विभागाध्यक्ष (शिक्षा) –
श्रीयुत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गंगेव जिला रीवा (म.प्र.)

Correspondence
डॉ. रंजना तिवारी
विभागाध्यक्ष (शिक्षा) –
श्रीयुत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गंगेव जिला रीवा (म.प्र.)

रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरुकता एवं अभिवृत्ति का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. रंजना तिवारी

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरुकता एवं अभिवृत्ति के बारे में अध्ययन किया गया है। गंगेव विकासखण्ड में जागरुकता जानने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श में चयनित 100 छात्र एवं 100 छात्राएँ कक्षा 11वीं एवं 12वीं शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से लिये गये। इसमें पर्यावरण जागरुकता मापन के लिए डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित Awareness Ability Measure एवं पर्यावरण अभिवृत्ति मापन के लिये डॉ. श्रीमती हसीन ताज, बंगलौर द्वारा तैयार की गई मापनी का प्रयोग किया गया है। पर्यावरण जागरुकता एवं अभिवृत्ति के प्रति छात्र–छात्राओं में कमी पायी गयी है।

विशिष्ट शब्दः– माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं, पर्यावरण जागरुकता, अभिवृत्ति

प्रस्तावना
पर्यावरण शब्द परि तथा आवरण दो शब्दों से मिलकर बना है। परि का अर्थ है – आस–पास तथा आवरण का अर्थ होता है, ढाँकने या घेरने वाला। इस प्रकार पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है – 'वह आवरण जो हमें चारों ओर से घेरे हुये हैं। हम कह सकते है कि पर्यावरण से आषय उन घेरे रहने वाली परिस्थितियों, प्रभावों और षक्तियों से है जो सामाजिक और सांस्कृतिक दषाओं के समूह द्वारा व्यक्ति या समुदाय के जीवन को प्रभावित करती हैं। एक अच्छे पर्यावरण का अर्थ है' इन सभी घटकों के मध्य संतुलन।
यदि यह संतुलन विकास जिसे दुर्भाग्य से भौतिक विकास मान लिया गया है किसी मानवीय त्रुटि से बिगड़ता है तो इस ग्रह से जीवन विलुप्त हो सकता है। पृथ्वी के पर्यावरण का संतुलन तभी कायम रह सकता है जब हम इसके संरक्षण के प्रति जागरुक हों।
अच्छा वातावरण छात्र के मानसिक एवं शारीरिक विकास का साधन है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर पर्यावरणीय जागरुकता को विकसित किये जाने वाले प्रयासों की ओर छात्र–छात्राओं को सचेत किया जाना चाहिए। उचित वातावरण में पले बालक बुद्धि, विद्या एवं व्यवहार में अच्छे एवं विभिन्न विषयों में रुचि रखते हैं। अतः पर्यावरण षिक्षा अनिवार्य एवं उपयुक्त होनी चाहिए।
पर्यावरण प्रदूषण से लगातार गड़बड़ाते प्रकृति चक्र को संतुलित कर विरासत में सुंदर और व्यवस्थित भविष्य हेतु पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करना एवं प्राकृतिक संसाधनों का विषाल भंडार भी लगभग सीमित है, उनके उचित तथा बुद्धिमता पूर्ण उपयोग से छात्र/ छात्राओं को लाभान्वित करना शोध का औचित्य है।

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का परिभाषीकरण :
1. **रीवा जिला–** मध्यप्रदेष राजस्व के विभाजित जिलों में से एक जिला है।
2. **गंगेव विकासखण्ड –** यह विकासखण्ड $24^0$36′ से $24^0$54′ उत्तरी अक्षांश तथा $81^0$15′ पूर्वी देशान्तर से $81^0$40′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।
3. **उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राएँ –** इससे तात्पर्य कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं से हैं।
4. **पर्यावरण –** शोध शीर्षक में प्रयुक्त ष्शब्द पर्यावरणीय से शोधार्थी का आषय, पर्यावरण की वैज्ञानिक अवधारणा से ही है अर्थात् पर्यावरणीय शब्द का आषय हमारे चारो ओर के वातावरण और उसके प्रमुख घटको से है।

5. **जागरूकताः** जागरूकता से तात्पर्य तथ्य के घटक तत्वों की जानकारी उसके विघटन/ असंतुलन, उनके कारणों एवं उसके बचाव से सम्बन्धी जानकारी से है।
6. **अभिवृत्ति –** डॉ. श्रीमती हसीन ताज द्वारा निर्मित मामनी का प्रयोग कर प्रयुक्त सांख्यिकी द्वारा अभिवृत्ति ज्ञात करना।
7. **समीक्षात्मक अध्ययनः** उच्चर माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन का उद्देष्य

1. पर्यावरण के तथ्यों के प्रति अनुकूल अभिवृत्तियों एवं मूल्यों का विकास करना।
2. गंगेव विकासखण्ड में शासकीय एवं अशासकीय छात्रों की पर्यावरण जागरुकता की तुलना करना।
3. गंगेव विकासखण्ड में छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता की तुलना करना।
4. गंगेव विकासखण्ड में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय अभिवृत्ति की तुलना करना।

शोध अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

शोध कार्य के अन्तर्गत जिन महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाष डालने का प्रयास किया है वह निम्नांकित हैं–

1. शोध अध्ययन द्वारा पर्यावरणीय संतुलन हेतु छात्र–छात्राओं में जागरुकता विकास के लिये विद्यालयों में संचालित गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
2. शोध अध्ययन के द्वारा ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा में कमी लाने की दिषा में प्रयास किया जा सकेगा।
3. वैश्विक तापन जैसी समस्या का प्रमुख कारण है वायु प्रदूशण, जो कि पर्यावरण की सबसे बड़ी समस्या है जो CO_2, CO जैसी गैसों की बढ़ती मात्रा के कारण भयानक होती जा रही है से अवगत कराना।

शोध परिकल्पना

मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक अनुसंधान का प्रारंभ जब होता है, जबकि एक समस्या हो। समस्या की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन परिकल्पना है। शैक्षिक अनुसंधान में समस्या चयन के बाद परिकल्पनाओं की रचना शोध प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। परिकल्पना से समस्या समाधान को उचित दिषा निर्धारित होती हैं परिकल्पनाओं द्वारा अनुसंधानकर्ता को तर्क संगत आंकड़ों के संकलन में ठीक दिषा मिलती है। भौतिक विज्ञानों में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार हैं:–

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन का परिसीमनः प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड की परिसीमा तक सीमित हैं।

न्यादर्ष चयनः अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्ष की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्ष तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्ष का चयन किया जाता है। विकासखण्ड के 8 विद्यालयों से कक्षा 11 एवं 12वीं के 200 छात्र–छात्राओं का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा किया गया है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

(i) सर्वेक्षण अध्ययन विधि : सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

(ii) साक्षात्कार विधि : शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।

(iii) साख्यिकीय विधि : सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिषत (%), S.D., Chisquare test, 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विष्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

शोध उपकरण

विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता का मापन करना है इसके लिए डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित Environment Awareness Ability Measure का उपयोग किया गया है। पर्यावरण की अभिवृत्ति का मापन करने के लिए डॉ. श्रीमती हसीन ताज, बंगलौर द्वारा तैयार की गई पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया है।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा, बी.एल. एवं सक्सेना, वी. एम. (1997)[1], हसन, एस. (1993)[2], अग्रवाल (1993)[3], चन्द्रा (1985)[4], गोयल (2005)[5], पाण्डेय, नीरज (2015)[6] ने पर्यावरण से सम्बन्धि कार्य किये है, जिनमें से निष्कर्ष निम्नानुसार है–

1. न्यादर्ष हेतु चयनित छात्रों में अधिकांष छात्रों का जल प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण के कारणों की जानकारी है।
2. पर्यावरण शिक्षा हेतु कम्प्यूटर पर आधारित अनुदेशात्मक सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।
3. विद्यालयों में राष्ट्रीय हरित कोर एवं हरियाली महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रमों से पर्यावरण संरक्षण में छात्रों की जागरुकता वृद्धि हुई है।

शोध क्षेत्र का परिचय

भारतवर्ष की हृदयस्थली मध्यप्रदेश के रीवा पठार के मध्यवर्ती भाग में स्थित विकासखण्ड गंगेव $24^0 36'$ से $24^0 54'$ उत्तरी अक्षांश तथा $81^0 15'$ पूर्वी देशान्तर से $81^0 40'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।

यह विकासखण्ड रीवा जिले के मध्यवर्ती भाग में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 591.3 वर्ग कि.मी. तक फैला है। विकासखण्ड के उत्तरी सीमा पर त्योंथर तहसील, पूर्व में नईगढ़ी, दक्षिण में रायपुर कर्चुलियान तथा पश्चिम में सिरमौर विकासखण्ड स्थित है। विकासखण्ड गंगेव की पूर्व से पश्चिम लम्बाई कम तथा दक्षिण से उत्तर की लंबाई अधिक है। विकासखण्ड अनियमित आकृति वाला क्षेत्र है, यह समुद्र तल से 715 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, जो निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 1: उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	N	M	σ	t
1.	छात्र	100	20.526	3.513	0.241
2.	छात्राएँ	100	20.478	3.249	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता का सांख्यिकीय विष्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के छात्रों का औसत उपलब्धि 20.526 तथा मानक विचलन 3.53 है तथा छात्राओं का औसत उपलब्धि 20.478 तथा मानक विचलन 3.249 है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't ' का मान 0.241 है।

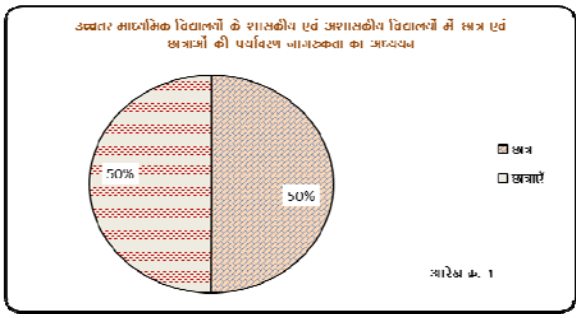

0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 0.241 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

सारणी क्रमांक 2: उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों की पर्यावरण अभिवृत्ति का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	N	M	σ	t
1	शासकीय	25	174.87	14.11	0.231
2.	अशासकीय	25	173.83	14.10	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों की पर्यावरण अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विष्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के छात्रों का औसत उपलब्धि 174.87 तथा मानक विचलन 14.11 है तथा अशासकीय विद्यालयों के छात्रों का औसत उपलब्धि 173.83 तथा मानक विचलन 14.10 है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान 0.231 है।

सारणी क्रमांक 3: उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्राओं की पर्यावरण अभिवृत्ति का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	N	M	σ	t
1	शासकीय	25	167.56	13.25	2.51
2.	अशासकीय	25	174.21	12.02	

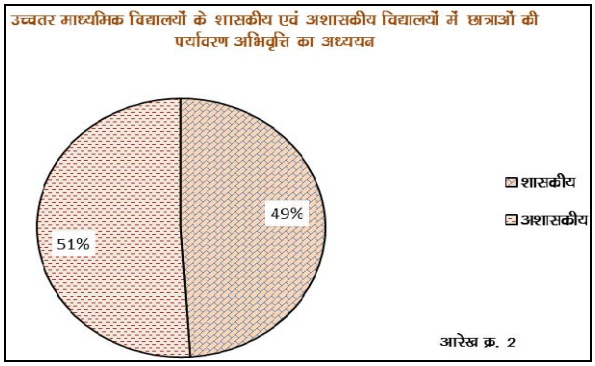

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्राओं की पर्यावरण अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विष्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के छात्राओं का औसत उपलब्धि 167.56 तथा मानक विचलन 13.25 है तथा अशासकीय विद्यालयों के छात्राओं का औसत उपलब्धि 174.21 तथा मानक विचलन 12.02 है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान 2.51 है।

0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि सारणी क्रमांक 2 व 3 के गणना से प्राप्त 't' का मान 0. 231 व 2.51 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि गंगेव विकासखण्ड के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर नही है। कक्षा 12वीं में पढ़ने वाले छात्रों एवं छात्राओं जो शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पढ़ते है पर्यावरण अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर अंतर होता है, शेष परिस्थितियों में भी पर्यावरण जागरुकता तथा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

संदर्भ

1. शर्मा बी.एल, सक्सेना वी.एम. – पर्यावरण शिक्षा, मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन, 1997, 1–2.
2. हसन एस. – बंगलादेश में पर्यावरण एवं औपचारिकेतर शिक्षाः औपचारिकेतर प्रथामिक शिक्षा के क्रियात्मक प्लान. नई दिल्लीः भारतीय पर्यावरण सोसाइटी, 1993.
3. अग्रवाल पी.के. – पर्यावरण एवं नदी प्रदूषण, आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1993.
4. चन्द्रा संस – पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य, आर्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1985.
5. गोयल एम.के. – पर्यावरण शिक्षा, विनोद मंदिर, आगरा, 2005.
6. पाण्डेय नीरज – रीवा जिले में माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं में पर्यावरणीय जागरुकता का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा (म.प्र.), 2015.